

रविवार 17 अगस्त, 2025

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठः भजन संहिता 96 : 9

"पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत करो।"

उत्तरदायी अध्ययनः भजन संहिता 96 : 2-4, 6, 8, 10

भजन संहिता 8 : 9

- ² यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन दिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो।
- ³ अन्य जातियों में उसकी महिमा का, और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।
- ⁴ क्योंकि यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है; वह तो सब देवताओं से अधिक भय योग्य है।
- ⁶ उसके चारों और वैभव और ऐश्वर्य है; उसके पवित्र स्थान में सामर्थ्य और शोभा है।
- ⁸ यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके योग्य है।
- ¹⁰ जाति जाति में कहो, यहोवा राजा हुआ है! और जगत ऐसा स्थिर है, कि वह टलने का नहीं; वह देश देश के लोगों का न्याय सीधार्ई से करेगा॥
- ⁹ हे यहोवा, हे हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 61 : 10, 11

- ¹⁰ मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चदर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आप को सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।
- ¹¹ क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के साम्हने धार्मिकता और धन्यवाद को बढ़ाएगा॥

2. दानियेल 4 : 1-3, 28-31, 33, 34, 36, 37

- 1 नबूकदनेस्सर राजा की ओर से देश-देश और जाति जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले जितने सारी पृथ्वी पर रहते हैं, उन सभी को यह वचन मिला, तुम्हारा कुशल क्षेम बढ़े!
- 2 मुझे यह अच्छा लगा, कि परमप्रधान परमेश्वर ने मुझे जो जो चिन्ह और चमत्कार दिखाए हैं, उन को प्रगट करूं।
- 3 उसके दिखाए हुए चिन्ह क्या ही बढ़े, और उसके चमत्कारों में क्या ही बढ़ी शक्ति प्रगट होती है! उसका राज्य तो सदा का और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥
- 28 यह सब कुछ नबूकदनेस्सर राजा पर घट गया।
- 29 बारह महीने बीतने पर जब वह बाबुल के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा,
- 30 क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है?
- 31 यह वचन राजा के मुंह से निकलने भी न पाया था कि आकाशवाणी हुई, हे राजा नबूकदनेस्सर तेरे विषय में यह आज्ञा निकलती है कि राज्य तेरे हाथ से निकल गया,
- 33 उसी घड़ी यह वचन नबूकदनेस्सर के विषय में पूरा हुआ। वह मनुष्यों में से निकाला गया, और बैलों की नाई घास चरने लगा, और उसकी देह आकाश की ओस से भीगती थी, यहां तक कि उसके बाल उकाब पक्षियों के परों से और उसके नाखून चिड़ियों के चंगुलों के समान बढ़ गए॥
- 34 उन दिनों के बीतने पर, मुझ नबूकदनेस्सर ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाई, और मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; तब मैं ने परमप्रधान को धन्य कहा, और जो सदा जीवित है उसकी स्तुति और महिमा यह कह कर करने लगा: उसकी प्रभुता सदा की है और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तब बना रहने वाला है।
- 36 उसी समय, मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; और मेरे राज्य की महिमा के लिये मेरा प्रताप और मुकुट मुझ पर फिर आ गया। और मेरे मन्त्री और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने के लिये आने लगे, और मैं राज्य में स्थिर हो गया; और मेरी और अधिक प्रशंसा होने लगी।
- 37 अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे॥

3. थिर्मयाह 9 : 23, 24

- 23 यहोवा यों कहता है, बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे;
- 24 परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही वह यहोवा हूँ, जो पृथ्वी पर करुणा, न्याय और धर्म के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूँ।

4. लूका 14 : 3 (से 2nd ,)

- 3 इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा।

5. लूका 15 : 4-6, 10

- 4 तुम में से कौन है जिस की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक खो जाए तो निन्नानवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे?
- 5 और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे कांधे पर उठा लेता है।
- 6 और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है, मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।
- 10 मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने आनन्द होता है॥

6. याकूब 1 : 19-21

- 19 हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते हो: इसलिये हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो।
- 20 क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है।
- 21 इसलिये सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।

7. 2 पतरस 1 : 2-8

- 2 परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए।
- 3 क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है।
- 4 जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूट कर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।
- 5 और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ।
- 6 और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति।
- 7 और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ।
- 8 क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के पहचानने में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।

8. 1 पतरस 2 : 25

- 25 क्योंकि तुम पहिले भटकी हुई भेड़ों की नाई थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गए हो।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 477 : 26 केवल

मनुष्य आत्मा की अभिव्यक्ति है।

2. 310 : 14 (साइंस)-18, 31-2

इसलिए विज्ञान आत्मा को ईश्वर के रूप में प्रकट करता है, पाप और मृत्यु से अछूता, — केंद्रीय जीवन और बुद्धिमत्ता के रूप में जिसके चारों ओर मन की प्रणालियों में सामंजस्यपूर्ण रूप से सभी चीजें हैं।

आत्मा नहीं बदलती।

आत्मा में न तो वृद्धि, परिपक्वता है, न ही क्षय है। ये परिवर्तन भौतिक अर्थों के संशोधन हैं, नश्वर विश्वास के अलग-अलग बादल हैं, जो होने की सच्चाई को छिपाते हैं।

3. 258 : 11-15, 19-24

मनुष्य अनंतता को दर्शाता है, और यह प्रतिबिंब भगवान का सही विचार है।

ईश्वर मनुष्य में अनंत विचार व्यक्त करता है जो हमेशा अपने आप को विकसित करता है, एक व्यापक आधार से ऊंचा और ऊंचा होता है।

अनंत सिद्धांत अनंत विचार और आध्यात्मिक व्यक्तित्व द्वारा परिलक्षित होता है, लेकिन तथाकथित इंद्रियों की सामग्री का सिद्धांत या उसके विचार का कोई संज्ञान नहीं है। मानव क्षमताएँ बढ़ जाती हैं और अनुपात में परिपूर्ण हो जाती हैं क्योंकि मानवता मनुष्य और ईश्वर की सच्ची अवधारणा को प्राप्त करती है।

4. 167 : 1-10

क्या हमें एक भौतिक ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपनी व्यक्तिगत इच्छा से बीमारों को ठीक कर दे, या हमें उस अनंत दिव्य सिद्धांत को समझना चाहिए जो ठीक करता है? यदि हम अंधविश्वास से ऊपर नहीं उठते, तो चिकित्सा विज्ञान प्राप्त नहीं होता, तथा इन्द्रिय-अस्तित्व के स्थान पर आत्मा-अस्तित्व को नहीं समझा जा सकता। हम जीवन को दैवीय विज्ञान में तभी ग्रहण करते हैं जब हम भौतिक बोध से ऊपर रहते हैं और उसे ठीक करते हैं। अच्छाई या बुराई के दावों की हमारी आनुपातिक स्वीकृति हमारे अस्तित्व के सामंजस्य को निर्धारित करती है, - हमारा स्वास्थ्य, हमारी लंबी उम्र और हमारी ईसाई धर्म।

5. 323 : 19-32

जब बीमार या पापी व्यक्ति यह महसूस करने के लिए जागते हैं कि उनके पास जो नहीं है उसकी आवश्यकता है, तो वे दिव्य विज्ञान के प्रति ग्रहणशील हो जाते हैं, जो उन्हें भौतिक इंद्रियों से दूर कर आत्मा की ओर

आकर्षित करता है, शरीर से विचारों को हटा देता है, तथा नश्वर मन को भी रोग या पाप से बेहतर किसी चीज के चिंतन की ओर ऊपर उठा देता है। ईश्वर का सच्चा विचार जीवन और प्रेम की सच्ची समझ देता है, जीत की कब्र को लूटता है, सभी पापों और भ्रम को दूर करता है कि अन्य मन हैं, और मृत्यु दर को नष्ट कर देता है।

क्रिश्चियन साइंस का प्रभाव उतना नहीं देखा जाता जितना महसूस किया जाता है। यह स्वयं को बोलने वाले सत्य की "स्थिर, हल्की आवाज" है। हम या तो इस उच्चारण से मुंह मोड़ रहे हैं, या हम इसे सुन रहे हैं और ऊपर जा रहे हैं।

6. 60 : 29-11

आत्मा के पास आत्मा को प्राप्त करने के लिए अनंत संसाधन हैं, और खुशी अधिक आसानी से प्राप्त की जाएगी और हमारे रखने में अधिक सुरक्षित होगी, अगर आत्मा में मांग की जाए। अकेले उच्च आनंद अमर आदमी के लालसा को संतुष्ट कर सकते हैं। हम व्यक्तिगत समझदारी की सीमा के भीतर खुशी का संचार नहीं कर सकते। इंद्रियां वास्तविक आनंद नहीं देती हैं।

मानव के हित में अच्छाई बुराई पर अध्यात्म और पशु पर आधिपत्य होना चाहिए, या सुख कभी नहीं जीता जाएगा। इस खगोलीय स्थिति की प्राप्ति हमारे पूर्वजन्म को कम करेगी, अपराध को कम करेगी, और महत्वाकांक्षा को उच्च लक्ष्य देगी। पाप की हर घाटी को ऊंचा किया जाना चाहिए, और स्वार्थ के हर पहाड़ को नीचे लाया जाना चाहिए, ताकि विज्ञान में हमारे भगवान का राजमार्ग तैयार हो सके।

7. 311 : 7-13 (से 2nd .), 22-25

अंतर मन अमर है क्योंकि यह आत्मा है, जिसमें आत्म-विनाश का कोई तत्व नहीं है। क्या मनुष्य आध्यात्मिक रूप से खो गया है? नहीं, वह केवल एक भावना सामग्री खो सकता है। सारा पाप भौतिक का है। यह आध्यात्मिक नहीं हो सकता। पाप यहाँ मौजूद है या उसके बाद केवल तब तक है जब तक कि पदार्थ में मन का भ्रम बना रहता है। यह पाप की भावना है, पापी अंतर मन नहीं है, जो खो गया है। बुराई अच्छे के भाव से नष्ट हो जाती है।

जब मानवता इस विज्ञान को समझती है, तो यह मनुष्य के लिए जीवन का नियम बन जाएगा, - यहां तक कि आत्मा का उच्च नियम, जो सद्भाव और अमरता के माध्यम से भौतिक अर्थों पर हावी है।

8. 215 : 7-10, 22-26

आत्मा और पदार्थ अपने विपरीत स्वभाव के कारण ही भिन्न हैं। नश्वरता अस्तित्व की वास्तविकता से परिचित नहीं हैं, क्योंकि सामग्री और मृत्यु दर आत्मा के तथ्यों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं।

अपने दिव्य प्रमाण के साथ, विज्ञान भौतिक अर्थ के प्रमाणों को उलट देता है। नश्वरता की हर गुणवत्ता और स्थिति खो जाती है, अमरता निगल जाती है। नश्वर मनुष्य उत्पत्ति, अस्तित्व और ईश्वर के साथ अपने संबंध में अमर मनुष्य का प्रतिरूप है।

9. 124 : 14-19

ब्रह्मांड, मनुष्य की तरह, विज्ञान द्वारा अपने दिव्य सिद्धांत, ईश्वर से व्याख्या की जानी है, और फिर इसे समझा जा सकता है; लेकिन जब भौतिक अर्थों के आधार पर समझाया जाता है और विकास, परिपक्वता और क्षय के विषय के रूप में प्रतिनिधित्व किया जाता है, तो ब्रह्मांड, जैसे मनुष्य, है और होना चाहिए, एक रहस्य है।

10. 125 : 2-20

अब मानव शरीर में कार्बनिक और कार्यात्मक स्वास्थ्य के लिए सबसे अच्छी स्थिति क्या मानी जाती है, वह अब स्वास्थ्य के लिए अपरिहार्य नहीं है। नैतिक स्थितियां हमेशा सामंजस्यपूर्ण और स्वास्थ्य देने वाली पाई जाएंगी। न तो जैविक निष्क्रियता और न ही अधिकता भगवान के नियंत्रण से परे है; और मनुष्य को नश्वर विचार बदलने के लिए सामान्य और स्वाभाविक पाया जाएगा, और इसलिए उसकी अभिव्यक्तियों में अधिक सामंजस्यपूर्ण रूप से वह पहले की अवस्थाओं में था जिसे मानव विश्वास ने बनाया और मंजूरी दी थी।

जैसे-जैसे मानव विचार एक अवस्था से दूसरे चरण में बदलता है, दर्द और दर्द रहितता, दुःख और आनन्द, - भय से आशा और विश्वास से समझ तक, - दृश्य अभिव्यक्ति अंतिम रूप से मनुष्य द्वारा शासित होगी, भौतिक अर्थ से नहीं। भगवान की सरकार को दर्शाते हुए, मनुष्य स्व-शासित है। जब दिव्य आत्मा के अधीन होते हैं, तो मनुष्य को पाप या मृत्यु से नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, इस प्रकार स्वास्थ्य के नियमों के बारे में हमारी सामग्री सिद्ध होती है।

11. 210 : 5-16

ईसाई धर्म का सिद्धांत और प्रमाण आध्यात्मिक अर्थों से समझा जाता है। उन्हें यीशु के प्रदर्शनों में दिखाया गया है, - जो सामग्री और उसके तथाकथित कानूनों की अवहेलना करता है बुराइयों को मिटाकर, और मृत्यु को नष्ट करके, "अंतिम शत्रु जो नष्ट हो जाएगा,"।

यह जानकर कि आत्मा और उसकी विशेषताओं को हमेशा मनुष्य के माध्यम से प्रकट किया गया था, मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, अंधे को दृष्टि दी, बधिर को सुना, पैरों को लंगड़ा किया, इस प्रकार दिव्य की वैज्ञानिक कार्रवाई को प्रकाश में लाया मानव मन और शरीर पर मन और आत्मा और मोक्ष की बेहतर समझ देना।

12. 120 : 4 (आत्मा)-6

आत्मा या आत्मा, ईश्वर, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है; और मनुष्य आत्मा, ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व रखता है, क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6